कॉन्ताँ ग्रेबाँ की कहानियां

अनुवाद के जरिए बाल-साहित्य की अच्छी आवक

प्रभात

I

'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?' और 'बरास्ता तरबूज' कॉन्ताँ ग्रेबाँ की बच्चों के लिए रची दो खूबसूरत किताबें अब हिन्दी में भी आ गई हैं। हिन्दी में लाने का काम वही एकलव्य, भोपाल ने किया है जो बरसों से हिन्दी और हिन्दी से इतर भाषाओं का बाल-साहित्य लगातार उपलब्ध करवाकर इस देश में अपने ढंग का दुर्लभ काम कर रहा है।

कॉन्ताँ ग्रेबाँ की ये दोनों किताबें 2011 में आ गई थीं, इन पर बात 2013 में हो रही है, ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि हिन्दी में बाल-साहित्य की समीक्षा की कोई परंपरा नहीं है। जरूरत ही नहीं समझी जाती कि बाल-साहित्य पर विचार-विमर्श भी देश की सांस्कृतिक जरूरत है। प्रोफेसर कृष्ण कुमार ने बाल-साहित्य को समझने, सराहने और शैक्षिक विमर्श के केन्द्र में लाने का अपनी तरह का अकेला और अनूठा काम किया है। लेकिन बहुत सारे लोग नियमित और स्तरीय लिख सकें, वह माहौल बनने में अभी भी देर है। समस्या यह भी है कि लिखने वाले कहां लिखें? अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में इसके लिए कोई जगह नहीं है। वहां बाल-साहित्य के लिए ही जगह खत्म या सीमित हो गई है तो समीक्षा के लिए गुंजाइश कहां से बनेगी। ले-देकर यही शिक्षा-विमर्श, शैक्षिक संदर्भ जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं की एकाध-एकाध पत्रिकाएं हैं, जिनका पाठक वर्ग बहुत ही थोड़ा-सा है। इसका नुकसान यह है कि बाल-साहित्य के लेखकों की संख्या जितनी है बाल-साहित्य की अच्छी रचनाओं की संख्या उतनी भी नहीं है।

II

इन दोनों ही चित्र-कहानियों को कॉन्ताँ ग्रेबाँ ने रचा है यानी दोनों किताबों के लिए लिखी गई ये कमाल की कहानियां भी उनके खूबसूरत जेहन की उपज हैं और उतने ही कमाल के चित्र भी उनके द्वारा जलरंगों से बिखेरे गए जादू का परिणाम है। बाल-साहित्य की दुनिया में एक बार फिर से ये बात सच साबित होती है कि ऐसी

कई किताबें काल को जीत लेने वाली साबित हुई हैं जिनके पाठ (टैक्स्ट) और चित्रांकन (इलस्ट्रेशन्स) का जादूगर एक ही रचनाकार है। वह चाहे जापानी रचनाकार की किताब 'चौदह चूहे घर बनाने चले' हों, चाहे रूसी लेखक वी. सुतेयेव की 'नाव चली', 'चूहे को मिली पेंसिल', 'बिल्ली के बच्चे' या 'रूसी और पूसी' आदि चित्र-पुस्तकें हों। ये कहानियां विताउते जिलिन्सकाइते की कहानी 'रोबोट और तितली' तथा एलिस मकरलेन की कहानी 'पहाड़, जिसे चिड़िया से प्यार हुआ' की तरह उस स्तर की भी हैं जहां उम्र और समझ आदि के नजरिए से किए जाने वाले पाठक-स्तर वर्गीकरण बेकार के जान पड़ते हैं क्योंकि इन कहानियों में ऐसे दुर्लभ रचना तत्व मौजूद हैं जो बच्चों और बड़ों को समान रूप से रसासक्त कर सकें।

III

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?

कहानी की शुरुआत बड़े आत्मीय ढंग से बातचीत के लहजे में होती है। पहला ही वाक्य देखें, ''भेड़िया तो कुछ भी खा लेता है... छोटा नरम मेमना, तीन गोल-मटोल नन्हे सूअर या फिर लाल-म-लाल राइडिंगहुड।'' बच्चे अपने जैसे नरम, गोल-मटोल और लाल जीवों को खाए जाने की कल्पना करके रोमांचित हुए बिना नहीं रह सकेंगे और उनका ध्यान इस पर भी अवश्य ही जाएगा कि भेड़िया तीन सूअर खा डालता है। यानी उन्हें अगर कहीं वह मिल जाए और वे खुद के अलावा दो दोस्तों के साथ हों तब भी जान बचाना मुश्किल है। इससे ठीक आगे के वाक्य में बच्चों को कहानी सुनने के लिए पूरी तरह से अपना बना लिया गया है, ''सब कहते हैं कि भेड़िए दुष्ट होते हैं। आओ तुम्हें बताता हूं कि ऐसा क्यों कहते हैं...।''

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?
कहानी व चित्र-कॉन्ताँ ग्रेबाँ
अंग्रेजी से अनुवाद : सुमित त्रिपाठी
एकलव्य, ई 10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित
वर्ष 2011, मूल्य 60 रुपये

कहानी में कहानी बनती है एक गलतफहमी से। एक मामूली-सी गलतफहमी कैसे एक गैर-मामूली गलतफहमी बनकर सारी अवधारणाओं में उलट-फेर कर देती है, इसकी यह कहानी है।

कुल किस्सा यह है कि एक दिन एक भेड़िया एक नन्हे मेमने से मिला जो कि अपने झुण्ड से बिछुड़ गया था। भेड़िए ने अपनी पुरानी कहानी से अलग कि तुम मेरा पानी झूठा क्यों कर रहे हो, मुस्कुराते हुए मेमने को सलाम किया। भेड़िए की कोसों दूर तक भी उस मेमने को खाने की तो दूर, जरा डराने की भी कोई मंशा नहीं थी। कहानीकार ने खुद लिखा है कि अभी वह दुष्ट खूंखार भेड़िया नहीं बना था, बस एक आम भेड़िया था। लेकिन मेमना तो ठहरा मेमना, बिल्कुल नर्सरी के बच्चों की टू कॉपी, जरा-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने वाला। उसे मुस्कुराकर सलाम करते हुए भेड़िए के सफेद चमकते दांत दिख गए। जो दिखते ही, जबड़ा छोड़कर कहां जाते भला। पर वह मेमना तो घबराकर सूअरों के पास भागा और उनसे कहा कि दुष्ट भेड़िए ने मुझ पर हमला किया। वह अपने नुकीले दांतों से मुझे काट खाना चाहता था। बस फिर क्या था सूअरों ने हंस को बताया, हंस ने गधे को, गधे ने मुर्गे को, मुर्गे ने चूहे को और हरेक ने कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताया ही। हर अगले ने पिछले वाले से कुछ ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया। इस बढ़ा-चढ़ाकर बताने में भेड़िए के दांत चक्कू जैसे हो गए, फिर तलवार जैसे। पहले बात थी कि वह मेमने को खा जाना चाहता था, यह बात बढ़कर ऐसे हो गई कि वह तो मेमने के पूरे परिवार को ही खाना चाहता था। चाहता था नहीं बल्कि साबुत निगल गया था। कुछ और बढ़कर बात ये हो गई कि वह मेमनों के एक पूरे झुण्ड को खा गया। इस तरह

आग की तरह फैलते और बढ़ते हुए यह अफवाह फैल गई कि कोई खूंखार दरिंदा है जिसके सामने जो भी पड़ता है उसको वह खा जाता है। जाहिर है होते-होते अफवाह की हवा खुद उस भेड़िए तक भी आई। अब भेड़िए भी कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं। भेड़िए ने जबड़ों में अपने एक बच्चे को लेकर परिवार सहित भागते हुए कहा कि एक निर्दयी राक्षस अपने रास्ते में पड़ने वाली हर चीज को नष्ट करता जा रहा है और आज रात वह भेड़िए को खाना चाहता है।

यह कोई अनहोनी बात नहीं है कि भेड़िया एक मांसाहारी जीव है और शिकार करके प्रकृति की जीवन शृंखला में अपने-आपको जीवित बनाए रखता है। तो उसके ऐसा होने में कुछ भी दुष्टतापूर्ण ठीक वैसे ही नहीं है जैसे शेर, बाघ, हाथी या खरगोश, मोर, मगर आदि किसी के भी इस दुनिया में होने में कुछ भी दुष्टतापूर्ण नहीं है। लेकिन यह कहानी बताती है कि एक सामान्य भेड़िए के बारे में फैली एक गलत अवधारणा कैसे उसे जंगल के सबसे घातक जीव के रूप में प्रस्तुत कर देती है और इससे कैसे हर कोई उसका तिरस्कार करते हुए उससे दूर जाना चाहता है। इस बात को यह कहानी कहती है। साहित्य कैसे इस प्रकार भीषण दुर्घटनाओं से बचाने का प्रयास करता है उसका भी बेजोड़ नमूना यह कहानी प्रस्तुत करती है। कहानी भेड़िए को दुष्ट के रूप में प्रचारित कर चुकने के बाद अपना काम समाप्त कर सकती थी और तब भी यह एक सफल कहानी कही जाती। लेकिन इससे आगे जो रचना हुई है, जो साहित्य सृजित हुआ है वह यह है कि जब अफवाहों के माध्यम से भेड़िया एक आम भेड़िया न रहकर संहार करने वाला खल राक्षस बन गया और जब ये खबर खुद उस तक पहुंची तो वह खुद भी इस संकट से अपनी रक्षा के लिए दयार्द्र हो अपने बच्चे को जबड़े में लेकर अपना और अपने परिवार का जीवन बचाता हुआ भागता है। यह बात तो पाठक जानते हैं कि जिसके डर के कारण वह सिर पर पांव रखकर दौड़ा चला जा रहा है वह कोई और नहीं वह खुद ही है।

हम सामाजिक जीवन में देखते हैं कि वृहत् मानव समाज में किसी भी जाति, समुदाय या धर्म विशेष के बारे में कुछ निराधार बातें प्रचलित हो जाती हैं। निराधार बातें जब मिथ्याचार और कपोल-कल्पनाओं के सहारे उड़ने लगती हैं तो उसे अफवाह कहते हैं और कोई अफवाह कैसे किसी जाति, नस्ल या धर्म के बारे में घृणा फैलाने में सफल हो सकती है और ऐसी सफलता के कैसे भयावह परिणाम निकल सकते हैं, आज के समय में यह कोई रहस्य नहीं है। और यह एक कड़वा सच तो है ही कि जातियों, धर्मों, संप्रदायों के बीच इन्हीं अफवाहों का सहारा लेकर उन्माद फैलाए जाते हैं।

तो ऐसा नहीं है कि जिसे हम सीमित अर्थों में बाल-साहित्य कह सकें वह कोई छोटी या अपूर्ण चीज होगी। बिल्कुल नहीं। वह अपने-आपमें स्वतंत्र और एक पूर्ण चीज है, पूर्ण रचना है जिसकी समाज और संस्कृति में जरूरत और अहमियत है। बाल-साहित्य की रचना कह देने मात्र से एक अच्छी रचना की व्यापकता और गहराई कम नहीं हो जाती, अगर उसमें वास्तव में कुछ कहा गया है और अगर किसी रचना के पास कहने के नाम पर जुगाली और पिष्टपेषण से अधिक कुछ नहीं है तो वह बाल-साहित्य के लिए भी गैर-जरूरी है, क्या मतलब है उसका! भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं? बच्चों के लिए कही गई कहानी होकर भी जीवन के एक यथार्थ को, एक सत्य को अभिव्यक्त करती है।

लेखक

प्रभात

राजस्थान के जाने-माने युवा कवि हैं। एकलव्य, भोपाल; रूम टू रीड, इण्डिया एवं अन्य प्रकाशनों से बच्चों के लिए कविता एवं कहानियों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

IV

बरास्ता तरबूज

'बरास्ता तरबूज' एक प्रेम-कहानी है। प्रेम कहानी भी एक तरबूजों की खेती करने वाले परिवार के दसेक साल के सासौ नाम के लड़के और लगभग ऐसी ही उम्र की एक भेड़ पालक परिवार की लड़की की।

''आज सुबह, पिता के साथ बाजार जाते हुए सासौ ने देखा एक खास जने को। आज सुबह, सासौ ने देखी... एक लड़की! यह तो तय है। आज से सासौ को प्यार हो गया है।''

कहानी में इतनी बात तो शब्दों में लिखी हुई है। कमी रही वह चित्रों ने पूरी कर दी है। पाठक देखते हैं कि कैसे भेड़ों के बीच एक मेमने को गोदी में लिए खड़ी नन्ही लड़की, सासौ को जानवर की पीठ पर बैठकर जाते हुए देखती है और सासौ भी एक बार उस पर नजर पड़ने के बाद नजर सामने को घुमा ही नहीं पाता है। गर्दन घुमाकर उसे देखता ही जाता है और सोचना शुरू कर देता है कि ''वह उसे कैसे खुश करेगा? क्या करे वह? सासौ को पक्का पता है कि लड़कियों को उपहार पसंद हैं। तो सासौ उसके लिए अपनी फसल में से दस सबसे खूबसूरत तरबूज चुनता है।''

वह एक टोकरी में तरबूज जमाता है और सिर पर सम्हाल लेता है। यह थोड़ा भारी है पर सासौ को प्यार है, और प्यार में तो वह इससे भी बड़ा बोझा उठा लेगा।

तो सासौ अपनी उड़ान भरता है। उसकी प्रेमिका शहर के दूसरी ओर रहती है। वह जगह दूर है। ...जब वह इस शानदार उपहार को देखेगी तो क्या करेगी! वह निश्चित ही उसे चूमने के लिए उसकी बांहों में उछल जाएगी...। सासौ को इसमें कोई संदेह नहीं है : लड़कियां, वे रूमानी होती हैं।''

आगे की कहानी सासौ के अपनी प्रेमिका तक के पहुंचने की प्रेम की कठिन डगर की कहानी है। दस तरबूजों का बोझा उठाकर धूप में चलना उसे बेहाल कर देता है। वह चार तरबूज बेचकर गाय खरीद लेता है। गाय भी थक जाती है तो वह चार और तरबूजों के बदले ऊंट ले लेता है। और फिर गाय और बचे हुए तरबूजों समेत ऊंट पर बैठकर आगे बढ़ता है तो ऊंट भी ढेर हो जाता है। फिर वह एक हाथी लेता है। गाय, तरबूज, ऊंट समेत हाथी पर बैठ जाता है।

''पर सूरज तो आग बरसा रहा है और वजन इतना है कि हाथी भी अचानक गिर पड़ता है। सासौ उन्हें कैसे छोड़ सकता है जिन्होंने उसे इतनी दूर लाने में मदद की। वह अपनी पूरी ताकत जुटाकर सब कुछ अपनी पीठ पर लाद लेता है।''

सब कुछ के मायने समझ रहे हैं न आप। सासौ अपनी पीठ पर हाथी, ऊंट, गाय और एकमात्र बचे तरबूज को लाद कर आगे बढ़ रहा है। प्यास से बेहाल सासौ अपनी प्रेमिका के लिए लाए आखिरी तरबूज को भी खाने पर विवश हो जाता है, नहीं खाएगा तो प्यास से मर जाएगा, मर जाएगा तो उसके करीब कैसे पहुंच पाएगा। तो वह तरबूज खा लेता है। आखिर तरबूज के बीजों की माला लेकर पहुंचता है लेकिन जब वह सामने आती है तो एक शब्द भी नहीं बोल पाता। वह बस अपना उपहार उसे थमा देता है। सासौ जानता है कि लड़कियां, वे बहुत प्यारी होती हैं।

वह खुशी से झूमकर माला अपने गले में डाल लेती है और फिर सासौ को देती है सबसे खूबसूरत उपहारः एक चुम्मी। सासौ शर्म के मारे लाल हो जाता है। यह देखकर उसकी प्रेमिका खिलखिलाती है...। लड़कियां जानती हैं : लड़के, वे शरमीले होते हैं।

अब पोंगापंथी शिक्षक-अभिभावक कहते रहें कि यह बच्चों को क्या सिखाने जा रहे हैं लेकिन इस बाल-प्रेमकथा के प्रजापति ने तो बच्चों के बीच परस्पर विकसित होने वाली प्रेम की कोमल, निश्छल, जीवंत, नैसर्गिक भावनाओं को रच दिया है।

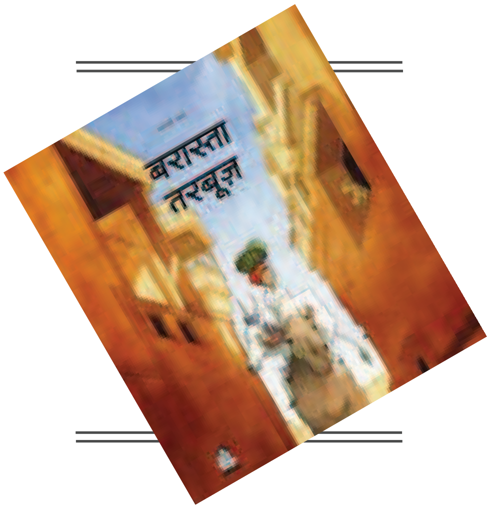

बरास्ता तरबूज
कहानी व चित्र-कॉन्ताँ ग्रेबाँ
अंग्रेजी से अनुवाद : शिव नारायण गौर
एकलव्य, ई 10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित
वर्ष 2011, मूल्य 60 रुपये

असल में प्रेम की भावना कोई ऐसी चीज नहीं है जो बीस-बाइस साल की उम्र में यह कहते हुए अचानक से प्रकट होगी कि 'सखी वसंत आया।' जिस तरह से अन्य भाव-विकार आरंभ से विकसित होना शुरू हो जाते हैं प्रेम के मामले में भी वही होता है।

बच्चों की इन भावनाओं को दबाने से उनमें कुण्ठा ही घर करती है, हीनताग्रन्थि बनती है और कई बार तो इन मामलों में बड़ों के व्यवहार इस तरह के हो जाते हैं कि मानो बच्चों में ऐसी बातें प्रकट हो रही हैं जैसे कि पाप। इससे अस्वस्थ मानसिकता बनने का, मनोभावों के विकृति के रूप में प्रकट होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए बच्चों की इन भावनाओं को संवेदनशील तरीके से देखने की जरूरत है।

आज के वक्त में ऐसे साहित्य की और भी जरूरत है जो बच्चों की इन कोमल भावनाओं का स्वस्थ ढंग से पोषण कर सकें। टीवी जिस तरह स्त्रियों को खा जाने वाले विज्ञापनों और उन्हें लूट लेने वाले आइटम-सांग्स से बजबजाता रहता है, जहां शुरुआत कपड़े उतारने से होती है, ऐसे में ऐसे साहित्य की आवश्यकता और अधिक महसूस होती है जिसमें इंसान को इंसान के रूप में देखा गया हो न कि सामान के रूप में।

V

'बरास्ता तरबूज' का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया है शिवनारायण गौर ने और 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं', का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया है-सुमित त्रिपाठी ने। किताबों की छपाई एकलव्य ने यूनीक ऑफसेट पुणे से करवाई है। कोई संदेह नहीं कि अच्छे कागज का इस्तेमाल किया है और सुंदर तरह से प्रकाशित किया है। इसे अब अलग से रेखांकित करने की आवश्यकता नहीं है कि एकलव्य की किताबों की कीमत बिल्कुल वाजिब रखी जाती है। ऐसी कि ऐसी सुंदर किताबों के दाम देते हुए पाठक प्रसन्नता का अनुभव कर सकें। इन दोनों किताबों के चित्र उन बातों को कहने के लिए हैं जो शब्दों में नहीं कही जा सकी हैं या नहीं कही गई हैं। शब्द भाषा के चित्र भाषा में रूपांतर मात्र से दूर ये चित्र कथा को और गहराते हैं और रचते हैं। इनकी अपनी स्वतंत्र भूमिका है, इनके बिना इन किताबों के इतने सुंदर हो सकने की कल्पना करना कठिन है। लेखक, प्रकाशक, अनुवादक सबको बधाई और जब मैं सबको कह रहा हूं तो इसमें उन पाठकों को भी शामिल कर रहा हूं जो इन किताबों को अब पढ़ेंगे। ◆